गौरैया

चाय की चुस्कियों के बीच

सुबह का अखबार पढ़ रहा था

अचानक

नजरें ठिठक गईं

गौरैया षीघ्र ही विलुप्त पक्षियों में

वही गौरैया,

जो हर आँगन में

घोंसला लगाया करती

जिसकी फुदक के साथ

हम बड़े हुयें

क्या हमारे बच्चे

इस प्यारी व नन्हीं–सी चिड़िया को

देखने से वंचित रह जायेंगे!

न जाने कितने ही सवाल

दिमाग में उमड़ने लगें

बाहर देखा

कंक्रीटों का षहर नजर आया

पेड़ों का नामोनिषां तक नहीं

अब तो लोग घरों में

आँगन भी नहीं बनवाते

एक कमरे के फ्लैट में

चार प्राणी ठुंसे पड़े हैं

बच्चे प्रकृति को

निहारना तो दूर

हर कुछ इण्टरनेट पर ही

खंगालना चाहते हैं

आखिर

इन सबके बीच

गौरैया कहाँ से आयेगी?

कृश्ण कुमार यादव

भारतीय डाक सेवा,

वरिश्ठ डाक अधीक्षक,

कानपुर नगर मण्डल, कानपुर–01